HINDI FILE

SIX SIGMA IAS

Dream | Dare | Deliver

DREAM FOR NATION | DARE TO SERVE | DELIVER WITH INTEGRITY

DAILY PRACTICE QUESTIONS

BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM

DATE : JULY 24, 2026

Comprehensive Coverage | Exam-Focused Analysis | Concept Clarity & Insights | Practice MCQs with Explanation | Daily Updates, Better Results

CONTACT INFO:
+91 92896 33341 | +91 96679 33341

EMAIL ID:
info@sixsigmaias.com

WEB PAGE:
www.sixsigmaias.com

ADDRESS:
C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

Q1. प्राचीन भारत में अनूठे (श्रमण) परंपराओं के उद्भव के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. मध्यम गंगा के मैदानों में शहरी केंद्रों के विस्तार और अर्थव्यवस्था के बढ़ते मुद्रीकरण (monetisation) ने श्रमण परंपराओं के उदय को सुगम बनाया।
2. बौद्ध धर्म और जैन धर्म के उद्भव के तुरंत बाद उपमहाद्वीप में बाद की वैदिक यज्ञ परंपरा को एकसमान रूप से अस्वीकार कर दिया गया था।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक

(b) दोनों

(c) कोई नहीं

(d) दी गई जानकारी से निर्धारित नहीं किया जा सकता

उत्तर: (a) केवल एक

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1 सही है:** छठी शताब्दी ईसा पूर्व में द्वितीय नगरीकरण (Second Urbanisation), व्यापार के विकास, श्रेणियों (guilds), सिक्कों और नए सामाजिक समूहों का उदय देखा गया। इन विकासों ने बौद्ध धर्म और जैन धर्म जैसी अनूठी (श्रमण) परंपराओं के उदय के लिए अनुकूल परिस्थितियां पैदा कीं, जिन्होंने कर्मकांडी रूढ़िवादिता पर सवाल उठाया।
- **कथन 2 गलत है:** वैदिक परंपराएं श्रमण परंपराओं के साथ सदियों तक फली-फूलती रहीं। गायब होने के बजाय, वैदिक प्रथाएं विकसित हुईं, और विभिन्न क्षेत्रों में कई धार्मिक परंपराएं सह-अस्तित्व में रहीं।

Q2. निम्नलिखित में से कौन सी पारिस्थितिकी तंत्र विशेषता आवर्तक (recurrent) गड़बड़ियों के खिलाफ इसकी दीर्घकालिक सहनशीलता (resilience) को सबसे सीधे तौर पर निर्धारित करती है?

(a) अकेले अधिकतम प्राथमिक उत्पादकता

(b) उच्च प्रजाति विविधता के साथ कार्यात्मक अतिरेक (functional redundancy)

(c) केवल शीर्ष शिकारी (apex predators) की उपस्थिति

(d) प्रजाति संरचना की परवाह किए बिना अधिकतम बायोमास संचयन

उत्तर: (b) उच्च प्रजाति विविधता के साथ कार्यात्मक अतिरेक (functional redundancy)

स्पष्टीकरण:

पारिस्थितिकी तंत्र की सहनशीलता (resilience) केवल उत्पादकता या बायोमास पर निर्भर नहीं करती है, बल्कि जैव विविधता और समान पारिस्थितिक कार्यों को करने वाली कई प्रजातियों की उपस्थिति (कार्यात्मक अतिरेक) पर निर्भर करती है। ऐसे पारिस्थितिकी तंत्र गड़बड़ियों के बाद अधिक प्रभावी ढंग से ठीक (recover) होते हैं क्योंकि कुछ प्रजातियों के कम होने पर भी पारिस्थितिक कार्य जारी रहते हैं।

- **विकल्प (a):** अकेले उत्पादकता सहनशीलता सुनिश्चित नहीं करती है।
- **विकल्प (c):** शीर्ष शिकारी पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता में योगदान करते हैं लेकिन एकमात्र निर्धारक नहीं हैं।
- **विकल्प (d):** विविधता के बिना उच्च बायोमास अभी भी पारिस्थितिक नाजुकता का परिणाम हो सकता है।

Q3. राजकोषीय नीति और व्यापक आर्थिक स्थिरीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. एक गंभीर आर्थिक मंदी के दौरान, पूंजीगत व्यय में वृद्धि का आम तौर पर राजस्व व्यय में समतुल्य वृद्धि की तुलना में अधिक दीर्घकालिक गुणक प्रभाव (multiplier effect) होता है।
2. प्रचलित मांग स्थितियों की परवाह किए बिना राजकोषीय घाटे में वृद्धि से आवश्यक रूप से मुद्रास्फीति में आनुपातिक वृद्धि होती है।
3. अच्छी तरह से लक्षित सार्वजनिक निवेश बुनियादी ढांचे में सुधार और उत्पादन लागत को कम करके निजी निवेश को आकर्षित (crowd in) कर सकता है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) सभी तीन

(d) कोई नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1 सही है:** पूंजीगत व्यय उत्पादक संपत्तियों का सृजन करता है, बुनियादी ढांचे को बढ़ाता है, और दीर्घकालिक विकास क्षमता को बढ़ाता है, जो अक्सर नियमित राजस्व व्यय की तुलना में बड़ा गुणक उत्पन्न करता है।
- **कथन 2 गलत है:** राजकोषीय घाटा स्वचालित रूप से मुद्रास्फीति का कारण नहीं बनता है। उनका मुद्रास्फीति प्रभाव उत्पादन अंतराल (output gap), वित्तपोषण पैटर्न, आपूर्ति बाधाओं और मौद्रिक नीति रुख जैसे कारकों पर निर्भर करता है।
- **कथन 3 सही है:** बुनियादी ढांचा निवेश लेनदेन और रसद लागत को कम करता है, जिससे क्राउड-इन प्रभाव के माध्यम से निजी क्षेत्र के निवेश को बढ़ावा मिलता है।

SIXSIGMA IAS
Dream | Dare | Deliver

Q4. केंद्र और राज्यों के बीच संबंधों को विनियमित करने वाले संवैधानिक ढांचे के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यदि राज्यसभा निर्धारित संवैधानिक बहुमत से ऐसा संकल्प पारित करती है कि राष्ट्रीय हित में राज्य सूची के किसी विषय पर कानून बनाया जाना चाहिए, तो संसद उस पर कानून बना सकती है।
2. राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान, राज्यों की कार्यकारी शक्तियां स्वतः समाप्त हो जाती हैं।
3. यदि दो या दो से अधिक राज्य ऐसे कानून का अनुरोध करने वाले प्रस्ताव पारित करते हैं, तो संसद राज्य सूची के विषय पर दो या दो से अधिक राज्यों के लिए कानून बना सकती है।
4. राज्यपाल राज्य विधानमंडल द्वारा पारित प्रत्येक विधेयक पर सहमति देने के लिए संवैधानिक रूप से बाध्य है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) केवल तीन

(d) सभी चार

उत्तर: (b) केवल दो

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1 सही है:** अनुच्छेद 249 के तहत, राज्यसभा विशेष बहुमत के माध्यम से राष्ट्रीय हित में राज्य सूची के विषयों पर कानून बनाने के लिए संसद को अधिकार दे सकती है।
- **कथन 2 गलत है:** राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान, राज्य सरकारें तब तक काम करती रहती हैं जब तक कि अलग से राष्ट्रपति शासन न लगाया जाए।
- **कथन 3 सही है:** अनुच्छेद 252 संसद को उनके अनुरोध पर दो या दो से अधिक राज्यों के लिए राज्य सूची के मामलों पर कानून बनाने की अनुमति देता है।
- **कथन 4 गलत है:** राज्यपाल कुछ विधेयकों को राष्ट्रपति के विचार के लिए सुरक्षित रख सकता है या, जहां संवैधानिक रूप से अनुमत हो, सहमति रोक सकता है या विधेयक को वापस कर सकता है (धन विधेयक के अलावा)।

Q5. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- **अभि कथन (A):** प्रमुख पर्वत श्रृंखलाओं के लीवर्ड (वृष्टिछाया) तरफ स्थित क्षेत्रों में अक्सर पास के विंडवर्ड (पवनमुखी) क्षेत्रों की तुलना में काफी कम वार्षिक वर्षा होती है।
- **कारण I:** विंडवर्ड ढलान पर ऊपर उठने वाली नम हवा एडियाबेटिक (रुद्धोष्म) ठंड से गुजरती है, जिससे पर्वत अवरोध को पार करने से पहले संघनन और वर्षण होता है।
- **कारण II:** लीवर्ड ढलान पर उतरने वाली हवा एडियाबेटिक संपीड़न के कारण क्रमिक रूप से गर्म और अपेक्षाकृत शुष्क हो जाती है, जिससे बादलों का निर्माण रुक जाता है।

निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

(a) अभि कथन सही है, और कारण I तथा कारण II दोनों सही हैं, और दोनों कारण अभि कथन की सही व्याख्या करते हैं।

(b) अभि कथन सही है, लेकिन केवल कारण I सही है।

(c) अभि कथन सही है, लेकिन केवल कारण II सही है।

(d) अभि कथन गलत है, हालांकि कारण I और कारण II दोनों सही हैं।

उत्तर: (a)

स्पष्टीकरण:

अभि कथन सही है। वृष्टिछाया (rain-shadow) प्रभाव जलवायु पर पर्वतीय प्रभाव का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

- **कारण I सही है:** किसी पर्वत पर चढ़ने के लिए मजबूर नम हवा एडियाबेटिक रूप से ठंडी होती है, जिसके परिणामस्वरूप विंडवर्ड ढलान पर संघनन और वर्षा होती है।
- **कारण II भी सही है:** अपनी अधिकांश नमी खोने के बाद, लीवर्ड तरफ उतरने वाली हवा एडियाबेटिक रूप से गर्म हो जाती है, जिससे सापेक्ष आर्द्रता कम हो जाती है और वर्षण दब जाता है।
- साथ में, दोनों कारण पूरी तरह से बताते हैं कि वृष्टिछाया क्षेत्रों में आसन्न पवनमुखी क्षेत्रों की तुलना में काफी कम वर्षा क्यों होती है।

दैनिक अभ्यास प्रश्न – करंट अफेयर्स अनुभाग से

Q1. पानी के नीचे फाइबर ऑप्टिक सेंसिंग सिस्टम (UFOSS) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. मौजूदा पनडुब्बी फाइबर-ऑप्टिक संचार केबल का उपयोग उनकी प्राथमिक संचार कार्यक्षमता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किए बिना वितरित सेंसर (distributed sensors) के रूप में किया जा सकता है।
2. UFOSS किसी भी बाहरी सेंसिंग उपकरण की आवश्यकता के बिना स्वतंत्र रूप से समुद्र के पानी की रासायनिक संरचना निर्धारित कर सकता है और समुद्री प्रदूषण को माप सकता है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक

(b) दोनों

(c) कोई नहीं

(d) दी गई जानकारी से निर्धारित नहीं किया जा सकता

उत्तर: (a) केवल एक

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1 सही है:** UFOSS पनडुब्बी ऑप्टिकल फाइबर को निरंतर सेंसिंग सरणियों में बदलने के लिए डिस्ट्रीब्यूटेड ध्वनिक सेंसिंग (DAS) और संबंधित ऑप्टिकल तकनीकों का उपयोग करता है। ये सिस्टम केबलों को अपनी संचार भूमिका जारी रखने की अनुमति देते हुए भूकंपीय गतिविधि, पानी के नीचे की हलचल, सुनामी और जहाजों के यातायात की निगरानी कर सकते हैं।
- **कथन 2 गलत है:** UFOSS मुख्य रूप से कंपन, तनाव और ध्वनिक संकेतों जैसी यांत्रिक गड़बड़ी का पता लगाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह समर्पित पर्यावरणीय सेंसर के बिना सीधे समुद्री जल रसायन का विश्लेषण नहीं कर सकता है या प्रदूषकों को नहीं माप सकता है।
- यह तकनीक समुद्री निगरानी, पनडुब्बी भूकंप निगरानी और सुनामी प्रारंभिक चेतावनी में भारत की क्षमता को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाती है।

Q2. उपभोक्ता संरक्षण के लिए संयुक्त राष्ट्र दिशानिर्देश (UNGCP) का प्राथमिक उद्देश्य निम्नलिखित में से कौन सा है?

(a) सीमा पार व्यापार विवादों को विनियमित करने वाले कानूनी रूप से बाध्यकारी अंतरराष्ट्रीय मानक स्थापित करना।

(b) उपभोक्ता कल्याण, उत्पाद सुरक्षा और निष्पक्ष बाजार प्रथाओं को मजबूत करने के लिए विश्व स्तर पर स्वीकृत नीतिगत ढांचा प्रदान करना।

(c) विश्व व्यापार संगठन के ढांचे के तहत लगाए गए टैरिफ बाधाओं को विनियमित करना।

(d) बहुराष्ट्रीय डिजिटल प्लेटफार्मों के लिए अनिवार्य अंतरराष्ट्रीय कराधान मानक निर्धारित करना।

उत्तर: (b) उपभोक्ता कल्याण, उत्पाद सुरक्षा और निष्पक्ष बाजार प्रथाओं को मजबूत करने के लिए विश्व स्तर पर स्वीकृत नीतिगत ढांचा प्रदान करना।

स्पष्टीकरण:

- UNGCP सरकारों को प्रभावी उपभोक्ता संरक्षण कानून और नीतियां विकसित करने में सहायता करने के लिए संयुक्त राष्ट्र द्वारा अपनाया गया एक गैर-बाध्यकारी अंतरराष्ट्रीय ढांचा है।
- दिशानिर्देश निम्नलिखित को बढ़ावा देते हैं:
    - उपभोक्ता सुरक्षा,
    - सूचित विकल्प,
    - सतत उपभोग,
    - विवाद समाधान,

- गोपनीयता संरक्षण,
- ई-कॉमर्स सुरक्षा उपाय,
- अंतरराष्ट्रीय सहयोग।

- ये कानूनी रूप से लागू करने योग्य होने के बजाय सलाहकारी हैं।

Q3. पांडवानी लोक परंपरा के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. पांडवानी मुख्य रूप से कहानी कहने, गायन और नाटकीय प्रदर्शन के संयोजन के माध्यम से महाभारत से एपिसोड का वर्णन करती है।
2. मध्यकालीन काल के दौरान धीरे-धीरे मध्य भारत में फैलने से पहले इस परंपरा की उत्पत्ति हिमालयी क्षेत्र में हुई थी।
3. कापालिक और वेदमती दोनों पांडवानी प्रदर्शन की मान्यता प्राप्त शैलियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) सभी तीन

(d) कोई नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1 सही है:** पांडवानी महाभारत पर केंद्रित एक कथा लोक प्रदर्शन है।
- **कथन 2 गलत है:** यह परंपरा छत्तीसगढ़ क्षेत्र और आसपास के क्षेत्रों की स्वदेशी है, न कि हिमालय की।
- **कथन 3 सही है:** दो प्रमुख प्रदर्शन परंपराएं हैं:
  - **वेदमती** - बैठे हुए अपेक्षाकृत संयमित वर्णन।
  - **कापालिक** - व्यापक इशारों के साथ नाटकीय और अभिव्यंजक प्रस्तुति।
- प्रसिद्ध प्रतिपादक तीजन बाई ने कापालिक शैली को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाया।

Q4. प्रयोगों के लिए सब-ऑर्बिटल लॉन्च वाहन (SOLVE) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. उभरती हुई अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों को मान्य करने के लिए कम लागत के सब-ऑर्बिटल उड़ान के अवसर प्रदान करने के लिए मुख्य रूप से SOLVE विकसित किया गया है।
2. SOLVE के माध्यम से उड़ाए जाने वाले पेलोड का उद्देश्य पृथ्वी के चारों ओर स्थिर कक्षीय प्रविष्टि (orbital insertion) प्राप्त करना है।

3. यह मंच शिक्षाविदों, स्टार्ट-अप्स और अनुसंधान संस्थानों को महंगे कक्षीय मिशनों के लिए प्रतिबद्ध करने से पहले वैज्ञानिक पेलोड का परीक्षण करने में सक्षम बनाता है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) सभी तीन

(d) कोई नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1 सही है:** SOLVE का उद्देश्य किफायती प्रायोगिक लॉन्च के अवसर प्रदान करना है।
- **कथन 2 गलत है:** एक सब-ऑर्बिटल लॉन्च कक्षीय वेग प्राप्त नहीं करता है; इसलिए, पेलोड अपना प्रक्षेपवक्र पूरा करने के बाद पृथ्वी पर लौट आता है।
- **कथन 3 सही है:** ऐसे मिशन कक्षीय तैनाती से पहले निकट-अंतरिक्ष स्थितियों के तहत घटकों को मान्य करके तकनीकी जोखिमों को कम करते हैं।
- पुन: प्रयोज्य प्रौद्योगिकी प्रदर्शन और वैज्ञानिक प्रयोगों के लिए दुनिया भर में सब-ऑर्बिटल प्लेटफार्मों का तेजी से उपयोग किया जाता है।

Q5. क्षुद्रग्रह तोरीफुने (Asteroid Torifune) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. क्षुद्रग्रह तोरीफुने सूर्य की परिक्रमा करने वाले छोटे ग्रहों (minor planets) की आबादी से संबंधित है।
2. तोरीफुने जैसे क्षुद्रग्रहों के अवलोकन से सौर मंडल के शुरुआती विकास को समझने में मदद मिलती है।
3. सभी क्षुद्रग्रह नष्ट हुए ग्रहों के अवशेष हैं जो कभी मंगल और बृहस्पति के बीच मौजूद थे।
4. दुनिया भर के ग्रह रक्षा कार्यक्रम दीर्घकालिक प्रभाव मूल्यांकन के लिए निकट-पृथ्वी की वस्तुओं के साथ-साथ कई अन्य क्षुद्रग्रहों की निरंतर निगरानी करते हैं।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) केवल तीन

(d) सभी चार

उत्तर: (c) केवल तीन

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1 सही है:** तोरीफुने एक मान्यता प्राप्त क्षुद्रग्रह (छोटा ग्रह) है।
- **कथन 2 सही है:** क्षुद्रग्रह सौर मंडल के गठन के समय की प्राचीन सामग्री को संरक्षित करते हैं।
- **कथन 3 गलत है:** आधुनिक ग्रह विज्ञान इस परिकल्पना को खारिज करता है कि क्षुद्रग्रह बेल्ट एक नष्ट हुए ग्रह से उत्पन्न हुआ है। इसमें बड़े पैमाने पर आदिम सामग्री शामिल है जो बृहस्पति के गुरुत्वाकर्षण प्रभाव के कारण कभी ग्रह के रूप में नहीं बनी।
- **कथन 4 सही है:** अंतरिक्ष एजेंसियां संभावित खतरनाक क्षुद्रग्रहों की पहचान करने और कक्षीय भविष्यवाणियों को परिष्कृत करने के लिए निरंतर अवलोकन कार्यक्रम बनाए रखती हैं।

Q6. हिंद महासागर क्षेत्र के रेखाचित्र मानचित्र पर, फॉकलैंड द्वीप (Falkland Islands) निम्नलिखित में से किसके सबसे निकट स्थित है?

(a) ग्रीनलैंड सागर

(b) दक्षिणी महासागर, टिएरा डेल फूगो के पूर्व में

(c) उत्तर अटलांटिक महासागर, दक्षिणी अर्जेंटीना के पूर्व में

(d) नार्वेजियन सागर

उत्तर: (c) उत्तर अटलांटिक महासागर, दक्षिणी अर्जेंटीना के पूर्व में *(नोट: इसे दक्षिण अटलांटिक महासागर के रूप में भी समझा जाता है, दिए गए विकल्पों के अनुसार निकटतम सही संदर्भ (c) है)*

स्पष्टीकरण:

- फॉकलैंड द्वीप (Falkland Islands) दक्षिण अटलांटिक महासागर में स्थित एक ब्रिटिश ओवरसीज टेरिटरी है, जो दक्षिणी अर्जेंटीना के तट से लगभग 500 किमी पूर्व में है।
- ये द्वीप निम्नलिखित कारणों से रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हैं:
    - दक्षिण अटलांटिक समुद्री मार्गों के साथ उनकी स्थिति,
    - मत्स्य पालन,
    - अपतटीय हाइड्रोकार्बन संभावनाएं,
    - अंटार्कटिक रसद।
- वे यूनाइटेड किंगडम और अर्जेंटीना के बीच संप्रभुता विवाद का विषय बने हुए हैं।
- UPSC अक्सर मानचित्र-आधारित प्रश्नों के माध्यम से रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण द्वीपों की भौगोलिक स्थिति का परीक्षण करता है।

दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

(GS–1 | 15 Marks | 250 Words)

Q.1 "महात्मा गांधी ने केवल राजनीतिक विचारधारा के माध्यम से नहीं, बल्कि अभिनव लामबंदी (Mobilization) के तरीकों के माध्यम से भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को एक संभ्रांत राजनीतिक संघर्ष से जन-आंदोलन में बदल दिया।" समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

उत्तर:

महात्मा गांधी के नेतृत्व में 1919 के बाद भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में एक मौलिक परिवर्तन आया। जहाँ इससे पहले राष्ट्रवाद मुख्य रूप से शिक्षित अभिजात वर्ग, वकीलों और शहरी राजनीतिक संगठनों तक सीमित था, वहीं गांधीजी ने राजनीतिक भागीदारी के नए तरीके पेश करके इसके सामाजिक आधार को व्यापक बनाया, जिससे स्वतंत्रता संग्राम आम भारतीयों के दैनिक जीवन से जुड़ गया। उनका योगदान न केवल 'स्वराज' के वैचारिक दृष्टिकोण को स्पष्ट करने में था, बल्कि ऐसी अभिनव तकनीकों को विकसित करने में भी था जिन्होंने राष्ट्रवाद को एक वास्तविक जन-आंदोलन में बदल दिया।

गांधीजी का सबसे बड़ा नवाचार 'सत्याग्रह' की शुरुआत थी, जिसने प्रतिरोध को हिंसक टकराव से अनुशासित नैतिक कार्रवाई में बदल दिया। उन्होंने केवल संवैधानिक आंदोलन पर निर्भर रहने के बजाय आम नागरिकों को असहयोग, सविनय अवज्ञा और अन्यायपूर्ण कानूनों के शांतिपूर्ण उल्लंघन के माध्यम से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। चंपारण सत्याग्रह, खेड़ा आंदोलन और अहमदाबाद मिल हड़ताल जैसे अभियानों ने यह प्रदर्शित किया कि किसान, श्रमिक और मध्यम वर्ग हिंसा का सहारा लिए बिना सामूहिक रूप से औपनिवेशिक सत्ता को चुनौती दे सकते हैं।

असहयोग आंदोलन (1920-22) और सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-34) ने राष्ट्रीय आंदोलन की सामाजिक संरचना का विस्तार किया। महिलाएँ अभूतपूर्व संख्या में सार्वजनिक जीवन में आईं, छात्रों ने सरकारी संस्थानों को छोड़ा, वकीलों ने अदालतों का बहिष्कार किया, व्यापारियों ने स्वदेशी वस्तुओं का समर्थन किया और किसानों ने दमनकारी कराधान को चुनौती दी। नमक मार्च ने, यद्यपि एक साधारण वस्तु पर केंद्रित होने के बावजूद, औपनिवेशिक आर्थिक शोषण के प्रतिरोध का प्रतीक बनकर देशव्यापी भागीदारी को प्रेरित किया।

समान रूप से महत्वपूर्ण गांधीजी का 'रचनात्मक कार्यक्रमों' पर जोर था, जिसमें खादी का प्रचार, अस्पृश्यता निवारण, ग्राम स्वच्छता, सांप्रदायिक सौहार्द और ग्रामीण आत्मनिर्भरता शामिल थी। इन पहलों ने यह सुनिश्चित किया कि राष्ट्रवाद राजनीतिक विरोध से आगे बढ़कर सामाजिक परिवर्तन तक पहुँचे।

सीमाएँ:

यद्यपि गांधीजी का दृष्टिकोण व्यापक था, फिर भी चौरी-चौरा की घटना के बाद असहयोग आंदोलन के स्थगन ने कई क्रांतिकारियों को निराश किया। सुभाष चंद्र बोस और भगत सिंह जैसे नेताओं ने पूर्ण अहिंसा की प्रभावशीलता पर सवाल उठाया। इसके अलावा, उनके प्रयासों के बावजूद 1940 के दशक के दौरान सांप्रदायिक विभाजन गहराता गया, जो अंततः देश विभाजन पर समाप्त हुआ।

निष्कर्ष:

गांधीजी ने राजनीतिक भागीदारी का लोकतांत्रिकरण करके भारतीय राष्ट्रवाद के स्वरूप को मौलिक रूप से बदल दिया। उनके तरीकों ने लाखों आम भारतीयों को स्वतंत्रता के संघर्ष में सक्रिय भागीदार बनने में सक्षम बनाया। अतः यह

उनके अभिनव लामबंदी के तरीके ही थे जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन को आधुनिक इतिहास के सबसे बड़े जन-संघर्षों में से एक में बदल दिया।

(GS–2 | 15 Marks | 250 Words)

Q.2 "भारतीय संघवाद की सफलता क्षेत्रीय आकांक्षाओं को समाप्त करने में नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक संस्थाओं के माध्यम से उन्हें समायोजित करने में है।" उपयुक्त उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिए।

उत्तर:

भारत के संघीय ढांचे को राष्ट्रीय एकता को संरक्षित करते हुए असाधारण सामाजिक, भाषाई, सांस्कृतिक और क्षेत्रीय विविधता को समायोजित करने के लिए डिज़ाइन किया गया था। क्षेत्रीय पहचानों को दबाने के बजाय, संविधान ऐसे लोकतांत्रिक तंत्र प्रदान करता है जिनके माध्यम से क्षेत्रीय आकांक्षाओं को व्यक्त, बातचीत और व्यापक संवैधानिक ढांचे में एकीकृत किया जा सकता है। परिणामस्वरूप, भारतीय संघवाद शक्तियों के कठोर वितरण के बजाय एक गतिशीलता और सहकारी प्रणाली के रूप में विकसित हुआ है।

इस समायोजनवादी दृष्टिकोण का सबसे महत्वपूर्ण प्रदर्शन **राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956** के माध्यम से भाषाई आधार पर राज्यों का पुनर्गठन था। राष्ट्रीय एकता को कमजोर करने के बजाय, भाषाई राज्यों के निर्माण ने संवैधानिक ढांचे के भीतर सांस्कृतिक पहचान को मान्यता देकर भारतीय संघ की वैधता को मजबूत किया। इसी तरह की प्रक्रियाओं के बाद बाद में उत्तराखंड, छत्तीसगढ़ और झारखंड जैसे राज्यों का गठन दीर्घकालिक क्षेत्रीय मांगों के जवाब में हुआ।

विधायिका, प्रशासनिक और वित्तीय शक्तियों का संवैधानिक वितरण संघ और राज्यों दोनों को स्पष्ट रूप से परिभाषित क्षेत्रों के भीतर काम करने में सक्षम बनाता है, साथ ही राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान लचीलेपन की अनुमति देता है। **अंतर-राज्य परिषद (Inter-State Council), वित्त आयोग और जीएसटी परिषद** जैसी संस्थाएं संवाद, परामर्श और सहकारी निर्णय लेने को बढ़ावा देती हैं, जिससे लंबे समय तक चलने वाले संघीय संघर्षों की संभावना कम होती है।

राजनीतिक विकास ने भी सहकारी संघवाद को मजबूत किया है। बीसवीं सदी के उत्तरार्ध से क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के उदय ने विविध क्षेत्रीय हितों को राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व करने में सक्षम बनाया है। गठबंधन सरकारों ने अक्सर राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दलों के बीच आम सहमति बनाने की आवश्यकता को अनिवार्य किया है, जिससे भारतीय लोकतंत्र का संघीय चरित्र गहरा हुआ है।

चुनौतियाँ:

इसके बावजूद, कई चुनौतियाँ भारतीय संघवाद की परीक्षा लेती हैं। नदी-जल बंटवारे से संबंधित विवाद, अधिक वित्तीय स्वायत्तता की मांग, राज्यपालों की भूमिका से संबंधित चिंताएं, और अत्यधिक केंद्रीकरण के आरोप कभी-कभी संघ और राज्यों के बीच तनाव पैदा करते हैं।

निष्कर्ष:

इन चुनौतियों के बावजूद, भारतीय अनुभव यह प्रदर्शित करता है कि संवैधानिक समायोजन आम तौर पर राजनीतिक दमन की तुलना में अधिक प्रभावी होता है। अधिकांश क्षेत्रीय आकांक्षाओं को जबरदस्ती के बजाय संवाद, लोकतांत्रिक चुनावों, संवैधानिक संशोधनों और संस्थागत सुधारों के माध्यम से संबोधित किया गया है। भारतीय संघवाद अपनी बदलती राजनीतिक वास्तविकताओं के अनुकूल ढलने की क्षमता से अपनी लचीलापन प्राप्त करता है।

(GS–3 | 15 Marks | 250 Words)

Q.3 "उच्च राजकोषीय घाटा आवश्यक रूप से अर्थव्यवस्था के लिए हानिकारक नहीं है। इसका प्रभाव इसके परिमाण की तुलना में सार्वजनिक व्यय की गुणवत्ता पर अधिक निर्भर करता है।" समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

उत्तर:

राजकोषीय घाटा सरकार के कुल व्यय और उसकी कुल गैर-ऋण प्राप्तियों के बीच के अंतर को संदर्भित करता है। जहाँ पारंपरिक आर्थिक सोच उच्च राजकोषीय घाटे को व्यापक आर्थिक अस्थिरता से जोड़ती है, वहीं समकालीन राजकोषीय प्रबंधन यह मानता है कि राजकोषीय विस्तार के परिणाम बड़े पैमाने पर व्यय की प्रकृति, प्रचलित आर्थिक स्थितियों और संसाधन उपयोग की दक्षता पर निर्भर करते हैं। इसलिए, राजकोषीय घाटे का मूल्यांकन केवल उसके संख्यात्मक परिमाण से नहीं किया जा सकता है।

आर्थिक मंदी की अवधि के दौरान, राजकोषीय घाटे में कैलिब्रेटेड वृद्धि उच्च सार्वजनिक व्यय के माध्यम से समग्र मांग को उत्तेजित कर सकती है। बुनियादी ढांचे, रसद, नवीकरणीय ऊर्जा, सिंचाई और डिजिटल कनेक्टिविटी में सरकारी निवेश रोजगार पैदा करता है, उत्पादकता बढ़ाता है और एक गुणक प्रभाव (multiplier effect) उत्पन्न करता है जो निजी निवेश को प्रोत्साहित करता है। इस तरह का उत्पादक पूंजीगत व्यय दीर्घकालिक संपत्तियों का सृजन करता है जो अर्थव्यवस्था की विकास क्षमता और भविष्य के राजस्व सृजन को बढ़ाने में सक्षम हैं।

उधार के आकार की तुलना में **व्यय की गुणवत्ता** अधिक महत्व रखती है। राजमार्गों, रेलवे, बंदरगाहों, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और अनुसंधान के वित्तपोषण के लिए ऋण लेना उत्पादक क्षमता को बढ़ाता है और समावेशी विकास में योगदान देता है। इसके विपरीत, अनुत्पादक सब्सिडी या आवर्ती प्रशासनिक व्यय के वित्तपोषण के लिए निरंतर उधार लेने से संबंधित आर्थिक संपत्तियों का निर्माण किए बिना ऋण बढ़ सकता है। इसलिए, राजकोषीय स्थिरता घाटे के स्तर के बजाय व्यय की संरचना पर निर्भर करती है।

जोखिम:

हालांकि, अत्यधिक राजकोषीय घाटा व्यापक आर्थिक चुनौतियां पैदा कर सकता है। बड़े सरकारी ऋण सार्वजनिक ऋण को बढ़ा सकते हैं, ब्याज दायित्वों को बढ़ा सकते हैं और भविष्य के विकास संबंधी खर्च के लिए राजकोषीय स्थान को कम कर सकते हैं। आपूर्ति बाधाओं की स्थिति में, घाटे के वित्तपोषण के माध्यम से उत्पन्न अत्यधिक मांग मुद्रास्फीति के दबाव में भी योगदान दे सकती है।

निष्कर्ष:

संक्षेप में, राजकोषीय घाटे का प्रभाव केवल इस बात पर निर्भर नहीं करता है कि सरकार "कितना" उधार लेती है, बल्कि इस बात पर निर्भर करता है कि उधार लिए गए संसाधनों का उपयोग "कैसे" किया जाता है। उत्पादक निवेश की ओर निर्देशित एक अच्छी तरह से प्रबंधित राजकोषीय घाटा आर्थिक विकास को तेज कर सकता है और निजी निवेश को आकर्षित कर सकता है। इसलिए, संधारणीय व्यापक आर्थिक स्थिरता प्राप्त करने में राजकोषीय परिमाण की तुलना में राजकोषीय गुणवत्ता, दक्षता और पारदर्शिता अधिक महत्वपूर्ण बनी हुई है।

(GS–4 | Ethics, Integrity & Aptitude | 15 Marks | 250 Words)

Q.4 "नैतिक शासन के लिए लोक सेवकों को वैधता को नैतिकता के साथ संतुलित करने की आवश्यकता होती है। नियमों का अंधानुकरण कभी-कभी न्याय के मूल उद्देश्य को ही विफल कर सकता है।" उपयुक्त उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिए।

उत्तर:

नैतिक शासन कानूनों और प्रशासनिक प्रक्रियाओं के मात्र अनुपालन से आगे तक फैला हुआ है। जहाँ वैधता लोक प्रशासन में एकरूपता, पूर्वानुमेयता और जवाबदेही सुनिश्चित करती है, वहीं नैतिकता करुणा, निष्पक्षता, न्याय और मानव गरिमा के मूल्यों को पेश करती है। इसलिए एक वास्तव में नैतिक लोक सेवक को नियमों को अपने आप में एक अंत मानने के बजाय कानूनी दायित्वों को संवैधानिक नैतिकता और जन कल्याण के साथ सामंजस्य बिठाना चाहिए।

प्रशासनिक अनुशासन बनाए रखने और मनमानेपन को रोकने के लिए नियम अपरिहार्य हैं। वे पारदर्शी प्रक्रियाएं स्थापित करते हैं, विवेक को कम करते हैं और कानून के शासन को बनाए रखते हैं। हालाँकि, असाधारण परिस्थितियों पर विचार किए बिना नियमों का कठोर पालन अन्यायपूर्ण परिणाम दे सकता है। उदाहरण के लिए, केवल प्रक्रियात्मक कमियों के कारण आपातकालीन चिकित्सा सहायता से इनकार करना कानूनी आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है लेकिन मानवता और लोक सेवा के नैतिक सिद्धांतों का उल्लंघन करता है।

स्वयं संविधान राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों और मौलिक अधिकारों के माध्यम से न्याय, समानता, स्वतंत्रता और गरिमा को बढ़ावा देकर इस संतुलन का प्रतीक है। लोक सेवकों से न केवल विधिक प्रावधानों को लागू करने की अपेक्षा की जाती है, बल्कि संवैधानिक मूल्यों को भी बनाए रखने की अपेक्षा की जाती है। प्राकृतिक आपदाओं के दौरान, अधिकारी समय पर राहत वितरण सुनिश्चित करने के लिए अक्सर प्रक्रियात्मक आवश्यकताओं में ढील देते हैं। इसी तरह, कल्याणकारी योजनाओं की संवेदनशील व्याख्या मामूली दस्तावेज अंतराल के बावजूद योग्य लाभार्थियों को सहायता प्राप्त करने में सक्षम बना सकती है।

निष्कर्ष:

फिर भी, नैतिकता विवेक के मनमाने अभ्यास के लिए औचित्य नहीं बन सकती है। व्यक्तिगत विश्वासों को कभी भी संवैधानिक सिद्धांतों या कानूनी प्रावधानों को ओवरराइड नहीं करना चाहिए। नैतिक शासन के लिए पारदर्शिता, जवाबदेही और तर्कसंगत निर्णय लेने की आवश्यकता होती है। अंततः, वैधता और नैतिकता को प्रतिस्पर्धी सिद्धांतों के बजाय पूरक के रूप में कार्य करना चाहिए। कानूनों को एक संस्थागत ढांचा प्रदान करना चाहिए जिसके भीतर नैतिकता मानवीय कार्यान्वयन का मार्गदर्शन करती है।

(Current Affairs | GS–3 | Science & Technology | 15 Marks | 250 Words)

Q.5 "भारत का सेमीकंडक्टर मिशन केवल एक औद्योगिक नीति पहल नहीं है, बल्कि तकनीकी संप्रभुता, आर्थिक लचीलेपन और राष्ट्रीय सुरक्षा को प्राप्त करने के लिए एक रणनीतिक अनिवार्यता है।" समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

उत्तर:

सेमीकंडक्टर आधुनिक डिजिटल अर्थव्यवस्था के मूलभूत घटक हैं, जो स्मार्टफोन, ऑटोमोबाइल, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सिस्टम, रक्षा उपकरण, दूरसंचार, चिकित्सा उपकरण और उच्च-प्रदर्शन कंप्यूटिंग को शक्ति प्रदान करते हैं। वैश्विक सेमीकंडक्टर कमी के दौरान देखी गई व्यवधानों और बढ़ती भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा ने लचीली घरेलू सेमीकंडक्टर क्षमताओं को स्थापित करने के रणनीतिक महत्व को उजागर किया है। परिणामस्वरूप, भारत का

सेमीकंडक्टर मिशन केवल एक औद्योगिक विकास कार्यक्रम का प्रतिनिधित्व नहीं करता है, बल्कि तकनीकी संप्रभुता, आर्थिक लचीलेपन और राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करने के उद्देश्य से एक व्यापक रणनीति है।

आर्थिक और विनिर्माण परिप्रेक्ष्य:

आर्थिक दृष्टिकोण से, सेमीकंडक्टर उद्योग में भारत के विनिर्माण परिदृश्य को बदलने की क्षमता है। देश दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते इलेक्ट्रॉनिक्स बाजारों में से एक है, फिर भी यह आयातित सेमीकंडक्टर चिप्स पर भारी निर्भरता बनाए रखता है। घरेलू निर्माण (fabrication), पैकेजिंग और परीक्षण सुविधाएं आयात निर्भरता को काफी कम कर सकती हैं, व्यापार संतुलन में सुधार कर सकती हैं और वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में भारत की स्थिति को मजबूत कर सकती हैं। यह क्षेत्र उच्च कुशल रोजगार पैदा करने, अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देने और सहायक उद्योगों के विकास को प्रोत्साहित करने की भी उम्मीद है।

रणनीतिक अनिवार्यता:

रणनीतिक रूप से, सेमीकंडक्टर महत्वपूर्ण राष्ट्रीय बुनियादी ढांचा बन गए हैं। रक्षा इलेक्ट्रॉनिक्स, सुरक्षित संचार नेटवर्क, उपग्रह, साइबर-सुरक्षा प्रणालियों और उन्नत हथियार प्लेटफार्मों को अत्याधुनिक सेमीकंडक्टर प्रौद्योगिकियों पर व्यापक रूप से भरोसा करना पड़ता है। बाहरी आपूर्तिकर्ताओं पर अत्यधिक निर्भरता देशों को आपूर्ति-श्रृंखला व्यवधानों, निर्यात प्रतिबंधों और भू-राजनीतिक कमजोरियों के संपर्क में लाती है। इसलिए, स्वदेशी सेमीकंडक्टर क्षमताओं का विकास रणनीतिक स्वायत्तता को बढ़ाता है और राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करता है।

सरकारी पहल और चुनौतियाँ:

सरकार ने **इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन (ISM)**, उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन (PLI), विनिर्माण संयंत्रों के लिए राजकोषीय सहायता और अंतर्राष्ट्रीय तकनीकी साझेदारियों के माध्यम से एक बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाया है। हालाँकि, पर्याप्त चुनौतियाँ बनी हुई हैं। सेमीकंडक्टर निर्माण के लिए भारी पूंजी निवेश, निर्बाध बिजली और पानी की आपूर्ति, अत्यधिक विशिष्ट मानव संसाधन और निरंतर तकनीकी नवाचार की आवश्यकता होती है। भारत को उन्नत विनिर्माण तकनीक, कच्चे माल के पारिस्थितिकी तंत्र, बौद्धिक संपदा और लंबे समय तक चलने वाले प्रोजेक्ट गर्भधारण काल से संबंधित बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

निष्कर्ष:

निष्कर्ष में, भारत का सेमीकंडक्टर मिशन आर्थिक विविधीकरण रणनीति से कहीं अधिक है। यह तकनीकी आत्मनिर्भरता, रणनीतिक लचीलेपन और स्थायी औद्योगिक प्रतिस्पर्धा में एक दीर्घकालिक निवेश है। यदि सुसंगत नीति, नवाचार-संचालित पारिस्थितिकी तंत्र और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग द्वारा समर्थित किया जाए, तो यह भारत को वैश्विक सेमीकंडक्टर मूल्य श्रृंखला में एक महत्वपूर्ण भागीदार के रूप में स्थापित कर सकता है।

SIXSIGMAIAS
Dream | Dare | Deliver